आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म्॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 9 अंक : 45 रोहतक, 28 अप्रैल, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

बलात्कार व दरिन्दगी का मुख्य कारण शराब व मांस का सेवन

❑ सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव॥
हे ईश्वर दोष हमारे सगरे दूर भगा दो।
जितने भी सद्गुण जगत बीच हमरे संग लगा दो॥
सारे दुर्गुण, दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजै।
मंगलमय गुण कर्म पदार्थ प्रेम-सिन्धु हमको दीजै॥

इस उपरोक्त वेदमन्त्र में सभी दुर्गुण, दुर्व्यसनों से दूर करके परमपिता परमेश्वर से सभी सद्गुणों की प्राप्ति के लिये प्रार्थना की गई है, क्योंकि—

महाभारत के अन्दर वनवास के समय पिपासा निवृत्ति के लिये पानी की तलाश में घूमते हुये तालाब के तट पर यक्ष ने युधिष्ठिर से अनेक प्रश्न किये और युधिष्ठिर ने उनके युक्तियुक्त उत्तर दिये। उन सभी प्रश्नों में, मैं केवल एक प्रश्न आपके समक्ष रख रहा हूँ।

यक्ष ने प्रश्न किया—को मृत्युः ? मृत्यु क्या है ?

युधिष्ठिर ने उत्तर दिया—व्यसनं वै मृत्युः ? व्यसनों में फँसना ही मौत है।

महाभारत का मुसल पर्व चीख-चीखकर पुकार रहा है कि जिस महापुरुष योगिराज श्रीकृष्ण को अन्ध श्रद्धावश इस देश के 75% जन भगवान् के रूप में मानते हैं और इसी महापुरुष के विषय में योगिराज, युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने टिप्पणी करते हुये कहा है कि श्रीकृष्ण जी महाराज ने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई बुरा कार्य नहीं किया। ऐसे युगपुरुष श्रीकृष्ण जी का समस्त वंश सुरा (शराब) के नशे में परस्पर युद्ध करते हुए नष्ट हो गया।

महर्षि दयानन्द ने कहा है—**'बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते'** प्रत्येक नशीला पदार्थ बुद्धि को नष्ट करने वाला होता है। इसी कारण से अनेक गाँव व अनेक नगरों से समाचार-पत्रों से खबर पढ़ने को मिलती हैं कि शराब पीने के उपरान्त गोलियाँ खाकर युवक मृत्यु के ग्रास बन रहे हैं, क्योंकि शराब पीने के उपरान्त मानव की चिन्तन शक्ति नष्ट हो जाती है, वह हानि-लाभ तथा अच्छे-बुरे का मनन नहीं कर सकता जिसके कारण पशु व उस व्यक्ति में कोई भेद नहीं रहता। किसी संस्कृत कवि ने उचित ही कहा है—

महम चौबीसी के गाँव भैणी भैरों में पूज्य आचार्य बलदेव जी महिलाओं को सहयोग का आश्वासन देते हुए। साथ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री, अन्तरंग सदस्य मा० जिलेसिंह एवं व्यायाम शिक्षक आचार्य चन्द्रदेव जी साथ में खड़े हैं।

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च सामान्यमेतद् पशुभि नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मात्हीनः पशुभिः समानः॥

खाने-पीने में, सोने-जागने में, भय-निर्भय में तथा सन्तान उत्पन्न करने में मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं है। चिन्तन, मनन के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करना तथा धर्मपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना ही मनुष्य और पशु में केवल मात्र अन्तर है। जो कोई मानव चिन्तन पूर्वक धर्म के अनुसार अपना जीवन नहीं जी रहा, उस मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं है।

आजादी से पूर्व जो कांग्रेस पार्टी शराब की दुकानों (ठेकों) और विदेशी विलायती कपड़ों की दुकानों पर पैकेटिंग (धरना) देकर शराब की बोतलों को तोड़कर और विदेशी कपड़ों की होली जलाकर देशभक्ति का परिचय दिया करती थी। आज वही घर-घर, गाँव-गाँव में शराब के ठेके खुलवा प्रत्येक व्यक्ति को मानव की जगह पशु बनाने का कार्य कर रही है। ये राजनैतिक संगठन इस कार्य को देश की उन्नति व तरक्की का सबसे श्रेष्ठ कार्य समझकर कर रहे हैं। इस शराबरूपी राक्षसी ने इस देश के युवकों के चरित्र का पतन इस सीमा तक कर दिया कि विदेश में भारत मूल के व्यक्ति को चोर-डाकू की दृष्टि से देखा जाता है। यहाँ का युवक शराब पीकर 80 वर्षीय, 90 वर्षीय बूढ़े दादा-दादी तथा माता-पिता की हत्या एवं धक्के देकर घरों से बाहर निकाल रहे हैं। भारतवर्ष का निवासी समझना आज शर्म की बात समझी जाने लगी है।

किसी समय इस राष्ट्र का नाम आर्यावर्त देश था। अर्थात् वह राष्ट्र जिसमें सर्वश्रेष्ठ मानवों का निवास है। अतः यह कथन प्रसिद्ध है कि—

एतद्देशप्रसूतस्य सकासादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वे मानवाः॥

इस देश में उत्पन्न हुए ज्ञानी, महात्मा, ऋषि-महर्षियों से विदेशी जन अपने-अपने धर्म व चरित्र की शिक्षा प्राप्त करने के लिये आया करते थे। ईसाइयों के ईशा और मुसलमानों के मुहम्मद ने भी यहीं तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त की थी। आज जिस आर्यावर्त देश में जहाँ राम, कृष्ण जैसे मर्यादित जीवन व्यतीत करने वाले महापुरुष हुए, जहाँ हनुमान भीष्म तथा ऋषि दयानन्द जैसे बालब्रह्मचारी हुए वहीं पर छोटी-छोटी बच्चियों के साथ दरिन्दगी से बलात्कार हो रहा है। कल ही सभी समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिला—'दरिन्दगी से फिर हिली दिल्ली', 'पाँच वर्ष की बच्ची से दुष्कर्म', 'सड़कों पर उतरे प्रदर्शनकारी', 'चौतरफा दबाव के कारण मासूम गम्भीर हालत में एम्स रेफर', 'नई दिल्ली में शुक्रवार को दुष्कर्म की शिकार पाँच वर्षीय बच्ची को गम्भीर हालत में एम्स

शेष पृष्ठ 2 पर....

बलात्कार व दरिन्दगी का..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

में भर्ती करवाया गया', 'बच्ची मौत से संघर्ष कर रही है', 'प्रदर्शनकारी छात्रा पर थप्पड़ (चांटा) लगाते ए.सी.पी. बनीसिंह', 'बच्ची के संरक्षक को दो हजार रुपये का लालच देकर भाग जाने को कहना' देश के ऐसे दुर्दिनों को देखकर कहना पड़ रहा है कि अच्छा रहे कि सभी राजनैतिक संगठन किसी धर्मात्मा सदाचारी, चरित्रवान्, ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ इरादे के पक्के मजबूत महान् आत्मा को देश की बागडोर सौंपकर अपने घर जा बैठे।

देश के उच्चपदस्थ नेता प्रधानमन्त्री इस विषय में कह रहे थे कि 'इस घटना से मैं बहुत विचलित हूँ', 'समाज को अपने अन्दर झांकना चाहिये', 'इस बुराई को जड़ से उखाड़ने की जरूरत है'। मैं प्रधानमन्त्री जी से यह पूछना चाहता हूँ कि आप कहते हैं कि इस बुराई को जड़ से उखाड़ने की जरूरत है। क्या आपने इस बुराई के पैदा होने के कारणों पर कभी चिन्तन किया? यदि नहीं किया तो आप विचलित क्यों हैं? आज आप इस राष्ट्र के माई-बाप हैं, यदि आप ही अपनी राष्ट्ररूपी सन्तान के लिये अपने अंदर झांकने का प्रयास नहीं करेंगे तो समाज अपने अन्दर कैसे झांक कर देखेगा? क्योंकि **'यथा राजा तथा प्रजा'** वाली कहावती प्रसिद्ध है। भारत जैसे गर्मी प्रधान देश में शराब व मांस का सेवन करने वाले व्यक्ति के चरित्र के पतन को कोई नहीं रोक सकता। जिस धर्म प्रधान देश में जिस गाय, भैंस, बकरी के दूध से मानव के शरीर का निर्माण होता है उसी का मांस खाया जाये इससे बड़ी कृतघ्नता व धर्म की दृष्टि से पतन क्या हो सकता है? सब पापों की जड़ शराब को तो भारत सरकार व आपकी राज्य सरकारों ने गाँव-गाँव, नगर-नगर और घर-घर तक पहुँचा दिया है। 18 वर्ष की आयु के उपरान्त बिना शादी के लड़के-लड़की के सम्बन्ध का क्या औचित्य है? आपके देश में लड़कों की शादी लड़कों से तथा लड़कियों की शादी लड़कियों से करवाने का क्या औचित्य है? और जहाँ हमारे जैसे 70 वर्ष, 80 वर्ष और 90 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध ने दूरदर्शन पर समाचार सुनते समय जबरदस्ती बहन-बेटी व माताओं की नंगी तस्वीर देखनी पड़े उस देश में बलात्कार, सामूहिक दुष्कर्म व चार-चार, पाँच-पाँच वर्ष की बच्चियों के साथ दरिन्दगी नहीं होगी तो और कहाँ होगी?

इन घटनाओं के कारणों को उत्पन्न करने-करवाने वाले उच्च पदस्थ अधिकारी व राजनेता फिर क्यों विचलित होते हैं? जब उच्च पदस्थ अधिकारी व राजनेता इन कारणों को पैदा करते हैं तो उन्हें समाज को यह कहने का क्या अधिकार है कि समाज को अपने अन्दर झांक कर देखना चाहिए। कोई व्यक्ति घी के टीन को अग्नि के पास रखकर यह कहे कि अग्नि के पास घी के पिंघलने की बीमारी को जड़ से उखाड़ फैंकना चाहिये। उसी प्रकार उपरोक्त कारणों के रहते इस दरिन्दगी की बीमारी को जड़ से नहीं उखाड़ा जा सकता।

समाज में इस विषय पर अब कुछ सार्थक प्रयास दिखाई देने लगे हैं। पिछले दिनों रोहतक हरयाणा के महम चौबीसी के गाँव भैणी भैरों में महिलाओं ने एक महिला संगठन का निर्माण किया। इस संगठन के नेतृत्व में सैकड़ों महिलाओं ने इकट्ठे होकर गाँव में पहुंचे रोहतक के सांसद के समक्ष शराब के ठेके के विरुद्ध आवाज बुलन्द की, लेकिन कुछ चापलूस चाटुकारों ने महिलाओं को सांसद के समीप नहीं पहुँचने दिया। महिलायें शराब के ठेके के विरुद्ध चिल्लाती रही और सांसद उनकी बातों को अनसुना करके चलते बने। इस प्रकार की घटनाएँ सत्ता पक्ष के लिये महंगी पड़ सकती हैं। अगले दिन इस महिला संगठन ने रोहतक के उपायुक्त से मिलकर शराब से त्रस्त अपना हार्दिक कष्ट उपायुक्त को कह सुनाया।

इन महिलाओं के शराब आदि दुर्व्यसनों के विरुद्ध संघर्ष को देखकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान आचार्य बलदेव जी, मैं स्वयं (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मन्त्री सत्यवीर शास्त्री), पूर्व कोषाध्यक्ष मास्टर जिलेसिंह, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के व्यायामाचार्य चन्द्रदेव जी उपरोक्त गांव में पहुँचे तथा उन्हें हर प्रकार से प्रोत्साहित करते हुए हर प्रकार की सहायता करने का आश्वासन दिया तथा बुराइयों के विरुद्ध और अधिक उत्साहित होकर संघर्ष करने को कहा।

केवल मात्र यही संगठन ही नहीं, भिन्न-भिन्न स्थानों पर देखा जा रहा है कि महिलाओं में समाज में बढ़ते दुर्व्यसनों के प्रति बड़ा भारी आक्रोश दिखाई दे रहा है और वे इन बुराइयों के विरुद्ध संगठित होती दिखाई दे रही हैं। 11 अप्रैल 2013 को महिला नेत्री प्रतिभा सुमन के नेतृत्व में लगभग डेढ़-दो दर्जन महिलाओं ने संगठित होकर गोहाना अड्डे पर एक धार्मिक स्थल के निकट खोले गये शराब के ठेके का विरोध करने पहुँची। बहन-बेटियों के उत्साह को देखकर आसपास के तथा राह चलते व्यक्ति भी बहनों की सहायता के लिए इकट्ठे हो गये। प्रशासन को बहनों की संगठन शक्ति के समक्ष नतमस्तक होना पड़ा। मैं (सत्यवीर शास्त्री) सभी बहनों तथा महिला संगठनों से अपील करता हूँ कि यदि इस राष्ट्र की धरोहर राष्ट्रीय संस्कृति को बचाना है तो आप गाँव-गाँव, नगर-नगर में महिलाओं के संगठनों का निर्माण करके इन दुर्व्यसनों को जड़-मूल से नष्ट करने का प्रयास करें। आप जब भी पुकार लगायेंगी आर्यसमाज सदा अग्रणी होकर आपके सहयोग के लिये तत्पर रहेगा।

अब मैं सरकार व प्रशासन से अपील करता हूँ कि सरकार दो मुँह सांप वाला कार्य न करे एक तरफ माननीय प्रधानमंत्री जी कह रहे हैं कि इस बुराई को जड़ से उखाड़ना चाहिये। इस घटना से मैं बहुत विचलित हूँ। दूसरी तरफ बलात्कार, सामूहिक दुष्कर्म, नन्हीं-मुन्नी बच्चियों के साथ दरिंदगी उत्पन्न करने वाले कारणों को राष्ट्र में उत्पन्न किया जा रहा है। यह कार्य आपका हाथी के दान्त खाने के और दिखाने के और के समान दिखाई देते हैं। आप इस देश को धर्मनिरपेक्ष कहकर सभी धर्मों को बराबर सम्मान देने की बात कहते हैं तथा सभी धर्मों के मन्तव्य को लागू करने की बात कहते हैं। हिन्दू (वैदिक) धर्म में मांस खाने वाले व शराब पीने वाले व्यक्ति को पशु की संज्ञा दी गई है। यथा—

मांस भक्षैः सुरापानैर्मूखश्चाक्षरवर्जितैः।
पशुभिर्पुरुषाकारैर्भाराक्रान्ता च मेदिनी॥

मांस खाने वाले, शराब पीने वाले, अक्षर वर्जित पुरुषों की शक्ल वाले पशुओं के बोझ से यह पृथ्वी दबी हुई है और इस्लाम धर्म में भी शराब पीना हराम कहा है। फिर क्या आपकी भारत सरकार तथा आपकी राज्य सरकारें केवल मनुष्य की शक्ल वाले पशुओं पर ही राज्य करना चाहती हैं। पशु को तो जब तक डण्डा दिखाई देगा तब तक वश में रहेगा और जब डण्डा दिखाई नहीं देगा तो गलती करेगा ही। अतः आपके कठोर मृत्युदण्ड से भी ये घटनाएँ रुकने वाली नहीं।

क्या शराब पर पाबन्दी लगाने वाले राज्य गुजरात की उन्नति नहीं हो रही? तो क्या फिर आपके राष्ट्र की शराब के बिना उन्नति नहीं हो सकती? हम तो भगवान से आपके तथा आपकी सरकारों के लिये सद्बुद्धि की ही कामना कर सकते हैं। आप जैसे बड़े नेता को समझाने की बात नहीं कही जा सकती, परन्तु हमारा विचार है कि बलात्कार व दरिन्दगी का मुख्य कारण मांस व शराब का सेवन है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी रोहतक के प्रांगण में सत्ताईसवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ, भजन एवं उपदेश का विशेष आयोजन शुक्रवार, दिनांक 3 मई 2013 से रविवार 5 मई 2013 तक किया जा रहा है। आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अध्यक्षता में शुक्रवार दिनांक 3 मई 2013 को सुबह 8 बजे ओ३म् का झण्डा फहराकर इस आयोजन का शुभारम्भ किया जायेगा।

विशिष्ट अतिथि आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व श्री सत्यवीर शास्त्री जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा मुख्य अतिथि डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी अध्यक्ष महर्षि दयानन्द शोधपीठ म०द०वि० रोहतक होंगे।

आप सब आर्य प्रेमियों से निवेदन है कि आप इष्ट-मित्रों सहित आकर इस आयोजन की शोभा बढ़ायें व धर्मलाभ उठावें।

—कर्णसिंह मोर, प्रधान आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी रोहतक

प्रो० महावीर उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त

आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् तथा गुरुकुल झज्जर के स्नातक रहे डा० महावीर जी को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त होने पर आर्यजगत् में प्रसन्नता की लहर व्याप्त है।

आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में विभागाध्यक्ष कुलसचिव तथा उपकुलपति पद पर भी कर्मठता पूर्वक कार्य कर चुके हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से आपको शुभकामनाएँ एवं बधाई हो।

—सत्यवान आर्य, सभा कार्यालय, रोहतक

* ओ३म् *

स्पृहणीय धन

-: वेद-मन्त्र :-

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परिबाधो जहि मृथः।
वसु स्यार्हं तदा भर॥ (साम० 10/134)

शब्दार्थ—(विश्वाः द्विषः) सब द्वेषों को (अप भिन्धि) दूर हटाकर विदीर्ण कीजिये। (बाधः) बाधाभूत रोगों को (मृथः) हिंसकों (रोगों को) (परिजहि) दूर कीजिये (तद्) उस (स्यार्हं) स्पृहणीय (वसु) धन को (आभर) भर दीजिये।

भावार्थ—इस मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना की है कि हे प्रभो! सहसा हमारे अन्दर प्रवेश करने वाली सभी द्वेष की भावनाओं को हमारे से दूर करके नष्ट कर दीजिये। हमारे पास ये बुरी भावनायें न आने पावें। मन की मलिनतायें राग-द्वेष और मोह हैं। हम इनको दूर करके अपने मन को निर्मल तथा पवित्र बनाने में समर्थ हों। **अपकारिषु यः साधुः सः राधुः सद्भिरुच्यते।** अपकारियों में जो साधु हो, साधु तो वही है। महात्मा गाँधी जी ने स्वामी दयानन्द जी महाराज तथा उनके अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की आलोचना की है। परन्तु वे भी स्वामी जी महाराज के ब्रह्मचर्य तथा विद्वत्ता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते थे। स्वामी जी महाराज जहर देने वाले के प्रति भी हित की भावना रखते थे। स्वामी जी महाराज को एक अधिकारी, स्वामी जी को विष देने वाले को पकड़ लाये। स्वामी जी महाराज ने सहसा यह कहकर कि मैं संसार को कैद कराने नहीं आया, मैं कैद से छुड़ाने आया हूँ। अपने विषदाता को भी मुक्त करा दिया। अन्त में अपने घातक जगन्नाथ जी को भी जीवनदान दे दिया। ऐसा उदाहरण संसार में किसी महापुरुष का नहीं मिलता। ऐसे महापुरुष ही **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** कहने की अधिकारी बनते हैं। इस राह के हम भी राही बनें।

इसी मन्त्र में उन्नति के मार्ग में बाधारूप और मृत्यु के कारणभूत रोगों को भी दूर करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। **'धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्'** इन चारों की सिद्धि स्वस्थ शरीर द्वारा ही हो सकती है। रोग इनकी प्राप्ति में बाधक तथा हिंसक होते हैं। हमारे शरीर इस प्रकार के तेजस्वी हों कि रोग अपना शिकार न बना सकें। हमें शरीर की वह दीप्ति दे जिससे सभी रोग भस्म हो जायें।

प्रभु से तीसरी प्रार्थना है कि हमारा स्पृहणीय धन श्रेयमार्ग हो। प्रेयमार्ग पर हम चलकर अपना जीवन नष्ट न करें। मोक्ष ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य है।

सभी पाठक ध्यान से पढ़ें—

विषयरूपी कीचड़ में मूर्ख तू फँस रहा है।
आश्चर्य है मृत्यु-मुख में पड़ा भी हँस रहा है॥
अब भी भलाई चाहे श्रेय-मार्ग अपना ले।
जीवन की बाजी लगाकर मोक्ष को पा ले॥

—आचार्य बलदेव

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सदस्यों से निवेदन

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 150/- रुपये **आर्य प्रतिनधि सभा हरयाणा** के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। **'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 1500/- रुपये है।** जो महानुभाव इस पत्रिका को मँगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** के नाम से सभा कार्यालय **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक'** के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले आर्य प्रतिनिधि को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

व्यवस्थापक : 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक दयानन्दमठ, रोहतक

यह कैसी देवी पूजा?

❑ **प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक**

मैं एक दिन घर से निकला तो देखा कुछ छोटी कन्यायें सिर पर चमकीला दुपट्टा बाँधकर चली जा रही हैं। मैं तुरन्त समझ गया कि पाखण्डियों के जो 'नवरात्र' चले हुए हैं उसी सिलसिले में इन कन्याओं को भोजन आदि के लिए किसी ने बुलाया होगा। फिर चिन्तन किया कि जिस किसी ने भी इन्हें बुलाया है, उसने इन कन्याओं की पूजा के लिए, इनके सत्कार के लिए नहीं अपितु अज्ञात, काल्पनिक मिथ्या देवी का रूप मानकर उसी देवी की पूजा के लिए बुलाया है। 'नवरात्र' जाने पर यदि ये कन्याएँ उस घर में जायेंगी जहाँ इनकी पूजा हुई है, तो भी क्या इनके साथ ऐसा ही व्यवहार होगा? कदापि नहीं। क्योंकि इन्हें तो अपनी स्वार्थसिद्धि, व्यक्तिगत कामना पूर्ति हेतु बुलाया था। यह कैसी देवी पूजा है? ऐसी पूजा पाप बढ़ाने वाली भी होती है। यह वास्तविक धर्म से च्युत कर देती है। दिल्ली जैसे शहरों में पार्कों में मैले-कुचैले, फटे कपड़ों में माताओं को सिगरेट पीते देख सकते हो, इनके मुख में झाग होते हैं। किसी से पूछने पर ज्ञात होता है कि ये ऐसी महिलाएँ होती हैं, जिनको कहीं से स्मैक आदि नशा की लत लग गई। पहले यह स्वयं के पैसे खर्च करती हैं, फिर शरीर बेचती हैं, फिर फटेहाल में पहुँचकर भीख मांगती हैं। इनकी तरफ किसका ध्यान जाता है? कौन इन्हें इस दलदल से निकाले? कौन इन्हें फटेहाल में संभाले? कितनी ही छोटी-छोटी बालिकाएँ कूड़ा बीनती हैं, भीख मांगती हैं, शोषित जीवन व्यतीत करती हैं। इनकी कौन पूजा करे? विदेश में एक जंगली जाति की लड़की को भाई परमानन्द पेड़ से बँधा देखते हैं। उन्हें पता लगता है कि इस कन्या को जीवित जलाने की तैयारी है। भाई जी उस लड़की को खोलकर स्वयं उसकी जगह बंध जाते हैं व प्राण देने के लिए तैयार हो जाते हैं। यह होती है सच्ची देवी पूजा।

जय दयानन्द ऋषिराज की

❑ **सुखदेव शास्त्री सिद्धान्तवाचस्पति,** आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

बेड़ियों के कटुक बन्धन में जननि जब काँपती थी।
निर्बलों के करुण क्रन्दन से धरा यह हाँफती थी।
आंग्ल की क्रोधाग्नि में जल मातृभूमि कराहती थी।
नष्ट हो अस्तित्व भारत, ब्रिटिश प्रभुता चाहती थी।
विकट वेला देश की थी तड़पता समुदाय था।
दिव्य धरती के वतन में हो रहा अन्याय था।
आसुरी वृत्तियों का चहुँ दिग् फैलता साम्राज्य था।
दम्भ-मिथ्या-द्वेष-हिंसा कर रहा निज राज्य था।
दिव्य गुर्जर की धरणि पर, वन्दिनी माँ गोद में।
ज्ञान-सुख प्रतिमूर्ति बन, आये अपरिमित मोद में।
नारा दिया इस राष्ट्र को अतुलित तुम्हारी शक्ति है।
क्यों दासता में दम्भ-मिथ्या में यहाँ अनुरक्ति है?
पावन धरा पर घोर अत्याचार क्यों हैं हो रहे?
सम्मान जग में नष्ट है, जन-गण यहाँ के सो रहे।
जन-मनों में शक्ति भरकर, ज्ञान जग को शुचि दिया।
जागरूक यह देश करके, कीर्ति चहुँ फैला दिया।
दूर कर पाखण्ड सारे, ज्ञान वेदों का बताया।
बढ़ चलो हे आर्य पुत्रो! का परम नारा लगाया।
स्थापना की तम मिटाने हित आर्यसमाज की।
पूर्ण भारत कह उठा-'जय दयानन्द ऋषिराज की'।
देशवासी आज आओ, उन्हीं पदचिह्नों पर चलें।
दनुजता फैली धरा पर मूलतः उसको दलें।
दूर कर पाखण्ड सारे देश की उन्नति करें।
आज फैली जो चतुर्दिक, वह सभी अवनति हरें।

वेदों का मुख्य तात्पर्य क्या है?

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥ (ऋ० 1/2/20)

भावार्थ—(विष्णुः) व्यापक जो परमेश्वर है उसका (परमं) अत्यन्त उत्तम आनन्द स्वरूप (पदं) जो प्राप्त होने, जानने और चाहने योग्य पद जिसका नाम मोक्ष है उसको (सूरयः) विद्वान्, धार्मिक, पुरुषार्थी और बुद्धिमान् लोग (सदा पश्यन्ति) सब काल में देखते हैं। वह कैसा है कि सब में व्याप्त हो रहा है और उसमें देश काल और वस्तु का भेद नहीं है अर्थात् वह ब्रह्म सब जगह परिपूर्ण है। जैसे (दिवीव चक्षुराततम्) सूर्य का प्रकाश आवरण रहित आकाश में व्याप्त होता है, इसी प्रकार ब्रह्म पद भी स्वयं प्रकाश एवं सर्वत्र व्याप्तवान हो रहा है। उस पर की प्राप्ति से कोई भी प्राप्ति उत्तम नहीं है। इसलिये चारों वेदों का मुख्य तात्पर्य उसी की प्राप्ति कराने के लिये है।

वेदों में अनेक विषय हैं परन्तु उनमें से मुख्य चार हैं—(1) विज्ञान अर्थात् सब पदार्थों को यथार्थ रूप से जानना, (2) कर्म, (3) उपासना और (4) ज्ञान हैं। **'विज्ञान'** उसको कहते हैं कि कर्म उपासना और ज्ञान, इन तीनों से यथावत् उपयोग लेना और परमेश्वर से लेके तृणपर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध का होना तथा उनसे यथावत् उपयोग का करना। विज्ञान का विषय चारों में प्रधान है, क्योंकि प्रथम ईश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना तथा दूसरा उसके द्वारा रचे हुए सब पदार्थों के गुणों को यथावत् विचार कर उनसे कार्य सिद्ध करना इनमें भी ईश्वर का जो प्रतिपादन है सो ही प्रधान है। **'तस्य वाचकः प्रणवः'** परमेश्वर का ही ओंकार नाम है। **'ओ३म् खं ब्रह्म'** आदि वाक्य उसी परमात्मा के नाम को प्रकाशित कर रहे हैं तथा उसी की प्राप्ति कराने में सब वेद प्रवृत्त हो रहे हैं, उसकी प्राप्ति के आगे किसी पदार्थ की प्राप्ति उत्तम नहीं है। सभी प्रकार का सत्याचरण रूप कर्म, यज्ञ, दान तथा सभी वर्ण और आश्रमों के द्वारा किये जाने वाले वैदिक तप एव ऋषि-मुनियों और विद्वानों के ब्रह्मप्राप्ति के उपदेश, परमेश्वर की प्राप्ति के लिये धर्म से युक्त सब कामों का करना, संयम, सेवा, साधना, सत्संग और स्वाध्याय आदि वैदिक कर्म एवं पञ्चमहायज्ञों का अनुष्ठान और उसी की प्राप्ति कराने में सब वेद प्रवृत्त हो रहे हैं। जिसकी प्राप्ति करना चारों वेदों का मुख्य विषय है तो वह ईश्वर क्या है?

ईश्वर का स्वरूप—

'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।' (योगदर्शन 1/24) (क्लेश-कर्म-विपाक-आशयैः) अविद्यादि पाँच क्लेश, शुभाशुभ मिश्रित कर्म, कर्मों के फल और कर्मों के भोगने से उत्पन्न संस्कार जिन्हें आशय कहते हैं इन सब से सम्बन्ध रहित अर्थात् (अपरामृष्टः) जीवों से भिन्न स्वभाव वाला चेतन विशेष या पुरुष विशेष वह सदा मुक्त स्वभाव वाला, जिसमें ऐश्वर्य की पराकाष्ठा होती है वही ईश्वर है। जीवात्माएँ सकाम कर्म करती हैं

❑ **देवराज आर्य,** सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक,
आर्य टैण्ड हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द

और फलों को सुख-दुःख के रूप में भोगती हैं। परन्तु ईश्वर सदा निष्काम कर्म ही करता है, इसलिए सुख-दुःख का भोग भी नहीं करता और उसमें संस्कार भी नहीं बनते। ईश्वर में अनन्त ज्ञान, बल, आनन्द और क्रिया है, ईश्वर ने सृष्टि की रचना जीवात्माओं को लौकिक सुख, मोक्ष सुख और पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का फल देने के लिए की है।

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।
(योगदर्शन 1/26)

वह परमात्मा भूत-भविष्यत्-वर्तमान में होने वाले सब गुरुओं का गुरु-विद्या दान देने वाला है। (कालेन-अनवच्छेदात्) वह काल के द्वारा मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। वह अविद्या आदि क्लेशों, पापकर्म तथा उनकी वासनाओं के भोगों से अलग है।

चारों वेदों का मुख्य विषय उस परमेश्वर की प्राप्ति कराना है तो वे वेद क्या हैं? सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यमात्र की भलाई के लिये परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान वेद है। उस परमात्मा ने सभी मनुष्यों के लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि व्यवहारों की सिद्धि के लिये सृष्टि की आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा आदि चार ऋषियों के हृदय में वेदों का ज्ञान दिया इन्हीं के द्वारा आगे ब्रह्मादि ऋषियों के बीच में वेदों का प्रकाश कराया। इसी ईश्वरीय ज्ञान का नाम **'वेद'** है। जिनके पढ़ने व सुनने से यथार्थ विद्या का ज्ञान, सुखों का लाभ, सत्यासत्य का निर्णय होता है। वैसे ही सृष्टि से लेकर आज पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओं को सुनते आते हैं इससे वेदों का नाम **'श्रुति'** पड़ा है। मनु महाराज वेद विषय में लिखते हैं कि—**'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'** चारों वेद धर्म के मूल स्रोत हैं।

'पितृदेव मनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्' पिता आदि पालक, विद्वान् और अन्य मनुष्यों का वेद ही मार्गदर्शक है। चार वर्ण, चार आश्रम, भूत, भविष्यत्, वर्तमान आदि की सब विद्या वेदों से ही सिद्ध होती हैं। इसी प्रकार चारों वेद धर्म निर्णय में परम प्रमाण हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदों को सब सत्य विद्याओं का भण्डार कहा है तथा जो वेद की अवमानना करता है वह नास्तिक कहाता है। अतः सब जीवों के सब सुखों का साधन वेद है।

यदि चारों वेदों के द्वारा ज्ञान का प्रकाश या वेद विद्या का उपदेश वह परमेश्वर हम मनुष्यों के लिये न करता तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि किसी को भी यथावत् प्राप्त न होती। उस परम दयालु परमात्मा ने प्रजा के सुख के लिये अनेक पदार्थों की रचना की है, इसी प्रकार सब सत्य विद्याओं से युक्त वेद विद्या का उपदेश भी सब मनुष्यों के सुख के लिये उसी ने दिया है।

उस परमेश्वर से बढ़कर जिसका कि निज नाम **'ओ३म्'** है, प्राप्त करने योग्य और कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं है। उसी की प्राप्ति कराने में सब वेद धर्म शास्त्र और ऋषि-मुनि लोग प्रवृत्त हो रहे हैं। सभी प्रकार के यज्ञ, दान, तप और धर्मानुष्ठान के कार्य उसी परमब्रह्म को जानने के लिये किये जाते हैं। मनुष्य जीवन का यही परम लक्ष्य और उद्देश्य है। उसको प्राप्त करने या जानने के पश्चात् और कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता। फिर उस परम ज्योति को जानने के लिये क्या करें, महर्षि स्वामी दयानन्द उपासना विषय में लिखते हैं—

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्त परि तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि॥ (ऋ० 1/1/11)

मुक्ति का उत्तम साधन उपासना है, इसलिए विद्वान् लोग उपासना रीति से सब मनुष्यों के हृदयों में व्याप्त ईश्वर को अपने आत्मा के साथ युक्त करते हैं। वह ईश्वर कैसा है कि (चरन्तं) अर्थात् सबका जानने वाला (अरुषं) हिंसादि दोष रहित कृपा का सागर (ब्रध्नं) सब आनन्दों को बढ़ाने वाला (रोचनाः) उपासकों के आत्मा को अविद्यादि दोषों के अन्धकार से छुड़ाकर (दिवि) ज्ञान से प्रकाशित करने वाला है। जब-जब मनुष्य लोग ईश्वर की उपासना करना चाहें, तब-तब इच्छा के अनुकूल एकान्त स्थान में बैठकर, अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर कर उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना को बारम्बार करके, अपने आत्मा को भलीभांति उसमें लगा दे। जो केवल एक अद्वितीय ब्रह्म तत्त्व है उसी में प्रेम और सर्वदा उसी की आज्ञापालन में पुरुषार्थ करना है, वही एक सब विघ्नों के नाश करने का वज्ररूप शस्त्र है। अन्य कोई नहीं। परन्तु यह उपासना योग दुष्ट मनुष्य को सिद्ध नहीं होता, क्योंकि—

नाविरतो दुश्चरितान्नासान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमनसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्॥
(कठ० 2/24)

जो पुरुष (दुश्चरितात्) वेद या धर्म शास्त्रों में निषेध किये चोरी मिथ्याभाषण और छल-कपटादि पाप कर्म से (न, अविरत) जब तक विरक्त नहीं हुआ अर्थात् दूर नहीं हुआ (एनम्) उस परमात्मा को (न) नहीं प्राप्त होता (अशान्तः) जिसका मन विषयभोग में आसक्त है, इन्द्रियों में चञ्चलता है वह भी (न) नहीं प्राप्त होता (असमाहितः) जिसको किसी का भी विश्वास नहीं, सभी धर्मशास्त्रों के बारे में संशय करता रहता है विक्षिप्त है (न) नहीं प्राप्त होता (वा) और (अशान्तमानसः) जिसका मन अशान्त तथा कर्मों के फल, बन्धन की तृष्णा में फँसा है वह (अपि) भी (न) उसे प्राप्त नहीं हो सकता।

तो फिर वह परमात्मा कैसे प्राप्त हो सकता है? (प्रज्ञानेन) सब विषयवासनाओं में दुःख दृष्टि करके, परमात्मा की ही मन, वचन, कर्म से स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने तथा उसी का विचार वा ध्यान तथा उसी का निरन्तर आज्ञापालन करने से, मोक्ष के साधनों के अभ्यास द्वारा वह प्राप्त हो सकता

शेष पृष्ठ 6 पर....

'समत्वं योग उच्यते' का मूर्तरूप थे महात्मा हंसराज

❑ प्रो० ओमकुमार आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द के देहावसान के पश्चात् जो कुछेक अग्रणी महापुरुष आर्यसमाज को मिले, जो सर्वतोभावेन वैदिक धर्म और ऋषि-मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु पूर्णत: समर्पित थे, उनमें **महात्मा हंसराज** का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है। यूँ तो उनके समकालीन अन्य आर्यनेताओं का महत्त्व भी कोई न्यून नहीं है जैसे पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द, असाधारण प्रतिभा के धनी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, शुद्धि आन्दोलन के शहीद पं० लेखराम आर्य मुसाफिर आदि किंतु महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को मैंने विशेष उल्लेखनीय कोटि में इसलिये रखा है क्योंकि उदात्त अवैतनिक सेवा के जिस उच्चादर्श को जिस अविचल निष्ठा और अपूर्व त्यागभावना से महात्मा हंसराज ने जीवन पर्यन्त निभाया उसकी मिसाल अन्यत्र मिलना प्राय: दुर्लभ है। उनकी इसी विशेषता के कारण उनको 'श्वेत परिधान में संन्यासी', 'तप-त्याग का प्रतिरूप', 'जीवित शहीद', 'निष्काम कर्मयोगी' आदि अभिधानों से अलंकृत किया जाता है। 'अवैतनिक सेवा' के भीष्म-व्रत को उन्होंने नया आयाम दिया, नई परिभाषा दी और इसी दृढ़ आधार पर डी.ए.वी. का भव्य भवन खड़ा किया जो शिक्षाजगत् में आज भी अपनी अलग पहचान बनाये हुये है। अपने सुदीर्घकालीन सेवाकार्य के दौरान जो अनेक उतार-चढ़ाव उन्होंने देखे, जिन विषम परिस्थितियों का अडिग रहकर उन्होंने सामना किया उनके मद्देनजर यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं कि गीताकार की परिभाषानुसार वे वास्तव में योगी थे क्योंकि समभाव [Even-mindedly/ with even-ness of mind] से समस्त द्वन्द्वों को सहन कर लेना ही योग कहलाता है। योगेश्वर कृष्ण स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हैं, अर्जुन को समझाते हैं—

योगस्थ: कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय:।
सिद्ध्यसिद्ध्यो: समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

गीता 2/48

अर्थात् हे अर्जुन प्रत्येक दशा में कर्मफल के प्रति अनासक्त रहना ही 'योगस्थ' होना कहलाता है और प्रत्येक स्थिति में 'समभाव' बनाये रखना ही योग है, अर्थात् समता ही योग है, समभाव और योग दोनों पर्यायवाची हैं—**समत्वं योग उच्यते**। महात्मा हंसराज के जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग उपस्थित हुये जो उनके लिये किसी 'अग्नि-परीक्षा' से कम नहीं थे, आँधी, तूफान और झकझोर देने वाले झंझावात से कम नहीं थे किंतु वे अडिग रहे, अडौल रहे, अविचल रहे और गीताकार द्वारा संकेतित उस 'समत्व' को बनाये रहे जिसे 'योग' की संज्ञा दी गई है। डी.ए.वी. महाविद्यालय लाहौर जैसी सुविख्यात एवं ऐतिहासिक संस्था का संस्थापक प्राचार्य मात्र चार रुपये [4/- रुपये केवल] मासिक किराये वाले सामान्य से आवास में रहा, प्रतिमास अपने अधीनस्थ स्टाफ को वेतन रूप में हजारों नहीं लाखों रुपये वितरित करता रहा किंतु स्वयं खाली हाथ घर आता रहा, किस प्रकार उस महापुरुष ने अपने 'अवैतनिक-सेवा-व्रत' के चलते स्वयं को और अपने परिवारजनों को एक शान-शौकत और ठाट-बाट की जिंदगी से दूर रहने को राजी किया होगा, इन सब बातों पर गहराई से विचार करें तो निष्कर्ष यही निकलेगा कि महात्मा हंसराज वास्तव में ही '**समत्वं योग उच्यते**' का साकार रूप थे। अवैतनिक सेवा उनकी विवशता नहीं थी बल्कि अपने प्यारे ऋषि के ऋण से अनृण होने का, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को तीव्रगति से आगे बढ़ाकर '**कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्**' के सपने को साकार करने का, अपने प्रिय डी.ए.वी. को शौहरत और स्तर के उच्चतम शिखर पर आसीन करने का स्वेच्छा एवं प्रसन्नता पूर्वक किया गया एक दृढ़ संकल्प था, पावन, पुनीत व्रत था, जिससे उन्हें सदैव आन्तरिक आह्लाद की अनुभूति हुई, पछतावा कभी नहीं हुआ। यजुर्वेद अध्याय 12 मंत्र 11 में राज्याभिषेक के अवसर पर राजपुरोहित जो अपने राजा से कहता है

.....ध्रुवस्तिष्ठा विचा चलि:।

यजु० 12/11

अर्थात् हे राजन्, आप सदैव अविचल भाव से अपने राजधर्म में स्थित रहें, कुछ ऐसा ही आदर्श महात्मा हंसराज ने अपने लिये चयनित किया हुआ था। किसी प्रकार की कोई भी प्रतिकूल अथवा विषम परिस्थिति उनके कार्य-संपादन में बाधा नहीं बन सकी। कभी भी उनकी कार्यकुशलता, दक्षता, क्षमता को प्रभावित नहीं कर सकी, उनके कर्त्तव्य-पालन के मार्ग में रोड़ा नहीं बन सकी, इस दृष्टि से देखें तो 'समत्व' के साथ-साथ '**योग: कर्मसु कौशलम्**' (गीता 2/50) की उक्ति भी उन पर सटीक चरितार्थ होती है।

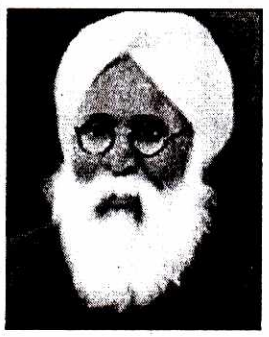

एक समय ऐसा भी आया जब जीवन-संगिनी माता ठाकुर देवी से सदा-सदा के लिये दु:खद बिछोह हुआ, बड़े सुपुत्र बलराज पर राजद्रोह का संगीन मुकदमा चला, छोटा सुपुत्र योधराज जानलेवा बीमारी से जूझ रहा था, किंतु महात्मा हंसराज इन सब मुसीबतों के बीच में भी सागर में स्थित उस सुदृढ़, अडोल चट्टान की तरह, जो प्रचण्ड लहरों के थपेड़े खाकर भी टस से मस नहीं होती, उसी प्रकार महात्मा हंसराज भी अटल, अविचल बने रहे।

कुछ समय के लिए तो बड़े भाई मुलखराज से मिलने वाली मासिक आर्थिक सहायता (जो लगभग 40/-45/- रु० थी) भी बन्द हो गई थी तब भी महात्मा जी के 'समत्व' उनकी '**स्थितप्रज्ञता**' (गीता 2/55), उनकी '**स्थितधी**' वाली स्थिति (गीता 2/56), पर लेशमात्र भी अन्यथा प्रभाव नहीं पड़ा। नीतिकारों ने महापुरुषों का एक यह लक्षण भी बताया है कि वे सदा '**एकरस**' रहते हैं, '**एकरूप**' रहते हैं और भगवान् भास्कर की उपमा देकर यह कहा है कि—

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च।
सम्पत्तौ विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

अर्थात् उदयकाल में भी ताम्रवर्ण होता है और अस्त होते समय भी ताम्रवर्ण ही होता है, इसी प्रकार सुदिन हों चाहे दुर्दिन, महापुरुष एकरूप ही रहते हैं और स्पष्ट करते हुये नीतिकारों ने कहा है कि चाहे आदेश राज्याभिषेक का हो, चाहे वनगमन का मर्यादा पुरुषोत्तम राम के मुखमण्डल पर वही एक रंग रहता है, न रंग फीका पड़ता है न हर्ष से कोई क्षणिक अतिरिक्त चमक आती है, उनका समभाव सदैव अप्रभावित रहा करता है। उक्त कथन महात्मा हंसराज पर भी अक्षरश: घटता है। महात्मा जी की इसी धैर्यवृत्ति, द्वन्द्वातीत मानसिकता, सांसारिक प्रलोभनों के प्रति अनासक्ति, मिशन के प्रति अटल समर्पण भाव को लक्ष्य करके उनके किसी प्रशंसक ने उनकी शोकसभा में उनको 'निष्काम ऋषि' तक कहा था और यह अतिशयोक्ति न होकर यथार्थोक्ति ही थी।

घटनाएँ अनेक और भी हैं, उदाहरण हैं, प्रसंग हैं जो दर्शाते हैं कि महात्मा हंसराज कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी बिना विचलित हुये बड़ी तत्परता से, ईमानदारी से सत्यनिष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्यों का निर्वहण करते रहे। किंतु आज आवश्यकता मात्र इस बात की नहीं है कि उन पर कोई शोधपूर्ण लेख या ग्रन्थ लिखा जाये, लच्छेदार भाषण देकर वाहवाही बटोरी जाये, बल्कि समय का तकाजा और वर्तमान संदर्भ की माँग यह है कि हम उनके सच्चे अनुयायी बनें, सर्वांशत: न सही, अधिकांशत: भी बाद में देख लेंगे, अभी तो अल्पांश में भी यदि उनके आदर्शों को हम अपना लें, उनके बताये हुये रास्ते पर चल सकें, उनके अधूरे छोड़े हुये कार्यों में से किन्हीं दो चार को भी पूरा कर सकें, वैदिक धर्म और ऋषि मिशन के प्रचार-प्रसार को व्यर्थ की औपचारिकताओं और दिखावे के भँवरजाल में से निकालकर यथार्थ और वास्तविकता के धरातल पर लाकर कोई ठोस कार्य कर सकें तो यही उस त्यागमूर्ति, निष्काम कर्मयोगी, '**समत्वं योग उच्यते**' के मूर्तरूप महात्मा हंसराज के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

यदि उनकी इस वर्ष की यह जयंती हम में ऐसी कोई प्रेरणा भर दे तो हम इसे परमपिता परमेश्वर की महती कृपा ही कहेंगे। हम भी उनकी तरह अपने जीवन का ध्येय कुछ इस प्रकार का निर्धारित कर लेते—

मंसूर से यह कह दो कि मरना नहीं मुहाल,
मर-मर के फिक्रे-कौम में जीना मुहाल है॥

काश! ऐसा हो जाता तो आज हम कहीं से कहीं पहुँच चुके होते।

सम्पर्क—जवाहरनगर, पटियाला चौक, जीन्द-126102 (हरयाणा)
मो० 09416294347, फोन 01681-226147

बलिवैश्वदेव और अतिथियज्ञ

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

अहरहर्बलिमित्ते हरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम॥

(अथर्ववेद काण्ड 19। अनु० 7। मन्त्र 7)

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

(यजुर्वेद अध्याय 19। मन्त्र 39)

(अग्ने०) हे परमेश्वर! जैसे खाने योग्य पुष्कल पदार्थ घोड़े के आगे रखते हैं, वैसे ही आपकी आज्ञापालन के लिये, (अहरहः) प्रतिदिन भौतिक अग्नि में होम करते और अतिथियों को (बलिं०) अर्थात् भोजन देते हुये हम लोग अच्छी प्रकार वाञ्छित चक्रवर्तिराज्य की लक्ष्मी से आनन्द को प्राप्त होके (अग्ने) हे परमात्मन्! (प्रतिवेशाः) आपकी आज्ञा से उलटे होके आपके उत्पन्न किये हुये प्राणियों को (मा रिषाम) अन्याय से दुःख कभी न देवें। किन्तु आपकी कृपा से सब जीव हमारे मित्र और हम सब जीवों के मित्र रहें। ऐसा जानकर परस्पर उपकार सदा करते रहें।

(पुनन्तु०) हे जातवेद परमेश्वर! आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिये, और जो आपके उपासक आपकी आज्ञा पालते हैं, अथवा जो कि विद्वान् ज्ञानी पुरुष कहाते हैं, वे मुझको विद्यादान से पवित्र करें। और आपके दिये विशेष ज्ञान वा आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियाँ पवित्र हों। तथा (पुनन्तु विश्वा भूतानि) सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

महर्षि दयानन्दकृत संस्कारविधि और पञ्चमहायज्ञविधि ग्रन्थों के अनुसार बलिवैश्वदेव यज्ञ की आहुतियाँ तथा भाग रखें।

अब पाँचवाँ अतिथि यज्ञ अर्थात् जिसमें अतिथियों की यथावत् सेवा करनी होती है, उसको लिखते हैं। जो मनुष्य पूर्ण विद्वान्, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, सत्यवादी, छल-कपट रहित और नित्य भ्रमण करके विद्या धर्म का प्रचार और अविद्या अधर्म की निवृत्ति सदा करते रहते हैं, उनको 'अतिथि' कहते हैं। इसमें वेदमन्त्रों के अनेक प्रमाण हैं। परन्तु उनमें से दो मन्त्र यहाँ भी लिखते हैं—

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथिगृहानागच्छेत्॥

स्वयमेनमभ्यदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वाऽऽवात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति॥ (अथर्ववेद काण्ड 15। अनु० 2। व० 11। मंत्र 1,2)

(तद्यस्यैवं विद्वान्) जिसके घर में पूर्वोक्त विशेषणयुक्त (व्रात्य०) उत्तमगुणसहित सेवा करने के योग्य विद्वान् आवे, तो उसकी यथावत् सेवा करे। और 'अतिथि' वह कहाता है कि जिसके आने जाने की कोई तिथि दिन निश्चित न हो।

(स्वयमेनम०) गृहस्थ लोग ऐसे पुरुष को आते देखकर, बड़े प्रेम से उठके नमस्कार करके, उत्तम आसन पर बैठावें। पश्चात् पूछें कि आपको जल अथवा किसी अन्य वस्तु की इच्छा हो सो कहिये। और जब वे स्वस्थचित्त हो जावें, तब पूछें कि (व्रात्य क्वावात्सीः) हे व्रात्या अर्थात् उत्तम पुरुष, आपने कल के दिन कहाँ वास किया था? (वात्योदकं) हे अतिथे! यह जल लीजिये और (व्रात्य तर्पयन्तु) हमको अपने सत्य उपदेश से तृप्त कीजिये कि जिससे हमारे इष्ट मित्र लोग सब प्रसन्न होके आपको भी सेवा से संतुष्ट रखें। (व्रात्य यथा०) हे विद्वन्! जिस प्रकार आपकी प्रसन्नता हो, हम लोग वैसा ही काम करें तथा जो पदार्थ आपको प्रिय हो, उसकी आज्ञा कीजिये। और (व्रात्य यथा०) जैसे आपकी कामना पूर्ण हो, वैसी सेवा की जाय कि जिससे आप और हम लोग परस्पर प्रीति और सत्संगपूर्वक विद्यावृद्धि करके सदा आनन्द में रहें।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, महर्षि दयानन्द)

भूल-सुधार

7 अप्रैल सन् 2013 के अंक में आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल (पलवल) की अपनी भूल से वार्षिक चुनाव में श्री राजवीर आर्य का नाम पुस्तकालयाध्यक्ष छप गया है। जबकि चुनाव में श्री रूपचन्द आर्य को पुस्तकालयाध्यक्ष चुना गया है।

—शंकरलाल भारद्वाज, प्रधान आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल (पलवल)

वेदों का मुख्य तात्पर्य क्या है..... पृष्ठ 4 का शेष.....

है। अर्थात् वेदज्ञान द्वारा ही वह प्राप्त हो सकता है। स्वामी दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पुरुषसूक्त में उस परमपुरुष की प्राप्ति बारे लिखते हैं कि—

तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

(यजु० 31/9)

उस 'यज्ञ' अर्थात् परमपूज्य परमेश्वर को जो सब जगत का बनाने वाला है, जो जगत् से पहले भी प्रकट था और सब जगत् में पूर्ण हो रहा है, उसको जो मनुष्य हृदय रूप आकाश में प्रेम-भक्ति से पूजन करता है, वही उत्तम मनुष्य है। उस परमेश्वर को (देवाः) विद्वान् (साध्याः) ज्ञानी लोग या योग साधना करने वाले तथा (ऋषयश्च ये) वेदमन्त्रों के अर्थ जानने वाले ऋषि लोग ही जान पाते हैं। सबसे पहले हम यह जानें कि 'देव' कौन होते हैं या कैसे बन सकते हैं?

देवः—'विद्वांसो हि देवा' विद्वानों को देव कहते हैं। जो सत्य मार्ग पर चलते हैं, काम, क्रोध, मोह और अहंकार से ऊपर उठकर मानवता की भलाई का कार्य करते हैं। देव का अर्थ देने वाला वास्तव में जो व्यक्ति धन, बल, बुद्धि, ज्ञान, ध्यान, योग आदि जो भी वस्तु उसके पास है और उसी को वह संसार के लोगों का कल्याण या उत्थान करने के लिये अपने सामर्थ्यानुसार उनके प्रति समर्पित कर देता है वह 'देव' या 'देवता' है। इसी प्रकार अष्टांग योग अर्थात् यम-नियम का पालन करने वाला, पञ्च महायज्ञों के द्वारा अपनी आत्मा को शुद्ध और निर्मल बनाने वाला व्यक्ति देव है। जो प्रतिदिन यज्ञ करते हैं और पुण्य कर्मों के द्वारा ब्रह्म का दर्शन पाते हैं। सत्य, न्याय, दया, दान, दमन की प्राप्ति करके स्वार्थ से ऊपर उठकर दैवी-सम्पदा से युक्त होकर जो जीव मात्र की भलाई के कार्य करते हैं वे देव कहलाते हैं। ऐसे ही व्यक्ति अपने श्रेष्ठ आचरण के द्वारा जो सबको उपासना के योग्य है उस इष्टदेव परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। मन्त्र में आगे बताया कि उसको साधक लोग भी जान पाते हैं।

साध्य या साधक कौन होते हैं?

वर्तमान जन्म में (क्रियमाण कर्मों) अर्थात् शुभ कर्मों के सेवन से इष्ट सिद्धि को प्राप्त होने योग्य व्यक्ति साध्य कहाते हैं। अष्टांग योग पर चलने वाले योगी को ही साधना करने वाला कहते हैं। वही साध्य या साधक कहलाता है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार अर्थात् अपनी इन्द्रियों को अध्यात्म मार्ग पर चलाना ही प्रत्याहार है। धारणा, ध्यान और समाधि के द्वारा जीवात्मा का परमात्मा में मग्न हो जाना साधक के लिये आवश्यक है। साध्य बनने के लिये अपने मन में तप की भावना जगानी होगी क्योंकि **'तपो मूलं हि साधनम्'** शरीर के द्वारा निष्काम सेवा, मन में सहनशीलता, वाणी में मधुरता की भावना जब जागृत हो जायेगी तभी साधक बनने का मार्ग खुलता दिखाई देगा।

महर्षि दयानन्द इस विषय में लिखते हैं कि **''जैसे सोने को आग में तपाकर निर्मल कर देते हैं, वैसे ही आत्मा और मन को भले कामों और अच्छे गुणों के द्वारा निर्मल कर देना ही तप है।''** उसे कम से कम एक घण्टा प्रतिदिन ज्ञान प्राप्ति हेतु आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय श्रद्धापूर्वक करना चाहिये।

ऋषि— आध्यात्मिक ज्ञान में उच्च स्तर का व्यक्ति ऋषि कहलाता है। **'ऋषयः मन्त्रद्रष्टा'** ऋषि लोग वेदमन्त्रों के ठीक-ठीक अर्थों को जानने वाले होते हैं। **'ऋषिः स यो मनुर्हितः'** जो दूसरों की सेवा और कल्याण करने में लगा रहता है। जो दूसरों के सुख और हित के लिये अपने जीवन को समर्पित कर देते हैं। जो दूसरों के लिये जीता है, उनके कष्ट, क्लेश और दुःखों को दूर करने का हरसम्भव प्रयत्न करता है। आधुनिक समय के ऋषि को देखना हो तो महर्षि दयानन्द की जीवनी अवश्य पढ़ें। घर से जिस सच्चे शिव की खोज में निकले थे उसे प्राप्त करने के बाद, अपने इस दुर्लभ ज्ञान को संसार के लोगों के समक्ष रखा। इसके लिये उन्हें अनेक कष्ट सहन करने पड़े। यह सब कुछ होते हुए भी उन्होंने सहर्ष ऋषि-परम्परा को निभाया। उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को वेद विद्या से आलोकित किया। वेदमार्ग पर चले बिना और उस परमपिता परमात्मा को जाने बिना कोई भी व्यक्ति कहीं पर भी सुखी नहीं हो सकता। **'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'** उसके जाने बिना मृत्यु दुःख से बचने का कोई उपाय नहीं है। यही वेदों का मुख्य तात्पर्य है। उसे हम देव, साध्य या ऋषि बनकर जानने का प्रयत्न करें।

आर्य-संसार

वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर, सुन्दर नगर (फतेहाबाद) का वार्षिक महोत्सव दिनांक 13 व 14 अप्रैल 2013 को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दोनों दिन प्रात: यज्ञ पर 6 दम्पतियों ने यज्ञ में यजमान का स्थान ग्रहण किया और यज्ञोपवीत धारण किया। प्रचार में सैकड़ों नरनारियों ने भाग लिया। नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन श्री कुनाल मिण्डा व जयश्री मिण्डा के करकमलों द्वारा किया गया। श्री सत्यपाल आर्य की प्रेरणा से मिण्डा परिवार द्वारा यह यज्ञशाला बनाई गई है। सभी विद्वानों ने मिण्डा परिवार को धन्यवाद दिया।

वैदिक विद्वान् डॉ० राजेन्द्र कुमार विद्यालंकार गुड़गाँव द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला तथा धर्म के लक्ष्यों पर विचार रखे। मुख्यातिथि चौ० प्रहलादसिंह गिलखेड़ा मुख्य संसदीय सचिव ने आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला। एक लाख पचास हजार रुपये देने की घोषणा की। बहिन संगीता आर्या (सहारनपुर) ने भजनों का सुन्दर कार्यक्रम पेश किया। मंच संचालन डॉ० राजवीर आर्य मन्त्री आर्यसमाज सुन्दर नगर ने किया। मंच पर सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, श्री बदलूराम आर्य, श्री जगदीश सींवर, बंसीलाल आर्य प्रधान, श्री अशोक वर्मा, श्री हरिसिंह भूषण, यशवीर आर्य, बलवीर आर्य, रवि आर्य, डीगमण्डी, सूबेसिंह आर्य व मा० जगदीश आर्य, नरेश सरदाना आदि मंच उप उपस्थित थे। स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। श्रीमती शन्नो देवी ठकराल (हिसार) ने महिलाओं को आर्यसमाज से जुड़ने का आह्वान किया। मुख्यातिथि आदि को स्मृति चिह्न व शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया।

—ओमप्रकाश आर्य, प्रेस-प्रवक्ता, आर्यसमाज, सुन्दर नगर (फतेहाबाद)

विदेशियों ने योग सीखा

अमेरिका तथा फ्रांस के लोगों ने 24 से 27 मार्च तक योग शिक्षक आचार्य वेदमित्र जी से योग सीखा। आचार्य जी ने योग शिक्षा से पूर्व शुद्ध अन्न के महत्त्व पर अत्यधिक जोर डाला। इसके लिये विदेशियों ने कच्चे चूल्हे पर बनी रोटियाँ तथा शाकाहार ग्रहण किया। इसी प्रकार प्राणायाम तथा ध्यान की शिक्षा दी। आचार्य जी ने ईश्वर की व्याख्या ईशा व श्री राम की सदृश्यता से भिन्न बतायी। बाहर से दिखने वाले पंखे को न दीखने वाली बिजली चलाती है। इसी प्रकार हमारे शरीर के अंग-प्रत्यंग तथा मन को जो ऊर्जा प्राप्त होती है वह परमात्मा से आती है। जीवों के शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार किसी को महाविद्वान्, किसी को हाथी घोड़े के शरीर मिले आदि में प्रभु की इन शक्तियों का वर्णन नहीं। वेदों में उसका वर्णन है।

कार्यक्रम का अच्छा प्रभाव रहा आचार्य जी को आगामी कार्यक्रम उनके देश में करने की अनुमति भी उन्हें दी।

—मनोज आर्य Msc. पतञ्जलि योगाश्रम, भाऊ आर्यपुर, रोहतक

सुदर्शनचक्र आयल

दो सौ मि.ली. सरसों के तेल में एक तोला लहसन और दो माशा अजवायन साफ करके डालकर आग पर चढ़ाओ। जब लहसन जलकर काला पड़ जाये तब आग से उतार लो। जिस बर्तन में तेल पकाया है जब वह ठण्डा हो जाये तब तेल को किसी दूसरे बर्तन में किसी जाली से पतले कपड़े से छान लो। बस तेल तैयार है। किसी शीशी में भर लो। यह तेल गोड़ों जोड़ों पर मालिश करने से दर्द को दूर करता है। हवा से बचना है। कानों के रोग दूर करता है। दाद, खुजली को मिटाता है। सिर में लगाने से जुएँ भागने लगती हैं। एन्टीसेप्टिक (Antiseptic) है।

अत: मुहांसों पर भी लगा सकते हो। ये ही तेल बाजार में सुन्दर पैकिंग में आकर्षक विज्ञापन के साथ सैकड़ों रुपयों में बिकता है। मेरा अनेक बार बनाकर आजमाया हुआ है। आप भी घर में सरलता से बना सकते हो।

—देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

वेदकथा का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज मॉडल टाउन (हिसार) की ओर से दिनांक 21 से 24 मार्च 2013 तक वेदकथा का आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रात: पं० रविदत्त शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थे। कई दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। डॉ० प्रमोद योगार्थी ने मंच का संचलन किया। प्रथम दिन यज्ञ के बाद प्रधान श्री जगदीश गुरेरा ने ध्वजारोहण किया।

कथा-वाचक डॉ० सुरेन्द्र कुमार गुड़गाँव थे। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी, वैदिक धर्म का महत्त्व, पाखण्ड से सावधान रहना, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। बहिन अंजलि आर्या, डॉ० योगमयी ऋचा (बिहार), पुरोहित सूर्यदेव वेदांशु के प्रेरणाप्रद आध्यत्मिक भजन हुये। 24 मार्च को चौ० हरिसिंह सैनी पूर्व प्रधान आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार शाल, पुष्प-माला डालकर शानदार अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती, आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री, सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, आचार्य दयानन्द शास्त्री, पं० रामजीलाल आर्य पूर्व सांसद, श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल, कर्नल ओमप्रकाश आर्य, ब्र० दीपकुमार आर्य तथा स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारी, श्री गंगादत्त आर्य, सीताराम बेरवाल, पवन रावल वासिया, ओमसिंह लाम्बा आदि उपस्थित थे।

इस बार नर-नारियों की हाजरी रिकार्ड तोड़ थी। प्रधान जगदीश आर्य ने सबका धन्यवाद किया।

—सुरेन्द्र बेरवाल एडवोकेट, प्रेस-प्रवक्ता, आर्यसमाज मॉडल टाउन (हिसार)

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

नलवा (हिसार) में श्री राजवीर आर्य की सुपुत्री उर्मिल आर्या के 17वें जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन 23 मार्च 2013 को किया गया। यज्ञ सभा के पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही द्वारा किया गया। स्नेही ने संस्कारों का महत्त्व व पंचमहायज्ञों पर प्रकाश डाला। उर्मिल के अच्छे स्वास्थ्य व लम्बी आयु की कामना की। आज शहीदी दिवस पर सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि क्रान्तिकारियों के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। यज्ञ पर श्री राजवीर आर्य, पवन कुमार आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती सरोज आर्या, भलेराम आर्य, युद्धवीर आर्य आदि ने उर्मिल आर्या को आशीर्वाद दिया। देशी घी की मिठाई बांटी गई।

—नरेन्द्र आर्य मंत्री आर्यसमाज नलवा (हिसार)

श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

श्री सूबेसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बलियावाला (फतेहाबाद) की धर्मपत्नी स्व० परमेश्वरी देवी की द्वितीय पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन किया गया। वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने यज्ञ करवाया। उन्होंने गायत्री मन्त्र व परमपिता परमात्मा के मुख्य नाम ओ३म् की सरल शब्दों में व्याख्या की। सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। श्रद्धांजलि के अतिरिक्त शराबबन्दी पर अपने विचार रखे। यज्ञ पर श्री महेन्द्र सिंह आर्य, मा० जगदीश आर्य, कृष्ण आर्य, रोशनलाल आर्य, डॉ० राजेन्द्र आर्य, सुखदेव नैन, ओमप्रकाश आर्य आदि ने श्रद्धाञ्जलि दी। श्री सूबेसिंह आर्य ने सबका धन्यवाद किया।

—उपेन्द्र आर्य, बलियावाला (फतेहाबाद)

वेदप्रचार मण्डल हिसार ने धुआँधार प्रचार किया

वेदप्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा गाड़ी को माइक लगाकर धुआँधार वेदप्रचार किया। पंच-महायज्ञ व वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी। निम्न गाँवों में वेदप्रचार व यज्ञ किया गया। 21 फरवरी को ग्राम बड़वा व पनिहार चक्क, 22 फरवरी ग्राम सीसवाला व सुण्डावास, 26 फरवरी को ग्राम दुबेठा, 28 फरवरी को ग्राम भरी, बांडा जाटान व मंगाली, 2 मार्च को ग्राम अग्रोहा, 4 मार्च को मोहबतपुर व मेहूवाला।

इस वेदप्रचार में मंडल के संरक्षक स्वामी सर्वदानन्द सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, डॉ० प्रमोद योगार्थी, संरक्षक आचार्य रामस्वरूप शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा।

—ब्र० दीपकुमार आर्य, प्रचारमन्त्री वेदप्रचार मण्डल हिसार

फलाहार अंजीर (FIG)

❑ नरेन्द्र सिंह, ओ३म् योग संस्थान (ट्रस्ट)

अंजीर उष्ण प्रदेशों का फल है, लेकिन दूसरे देशों में सूखे अंजीरों का उपयोग किया जाता है। अरब, ईरान और अफ्रीका के विभिन्न देशों में अंजीर के वृक्ष बहुतायत से होते हैं। इसके वृक्षों की ऊँचाई सोलह फुट तक होती है। कच्चे अंजीर के फल हरे रंग के होते हैं, लेकिन पक जाने पर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। अंजीर के वृक्षों पर वर्षा और ग्रीष्म ऋतु में दो बार फल लगते हैं। ग्रीष्म ऋतु में अधिक रस भरे और स्वादिष्ट फल होते हैं।

अंजीर के कच्चे फलों का सब्जी के रूप में सेवन किया जाता है। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार अंजीर में क्षार और विभिन्न विटामिन होने के कारण अधिक पौष्टिक और शक्तिवर्धक गुण होते हैं।

अंजीरों का सेवन करने से शरीर में रक्त की वृद्धि होती है। पाचन-क्रिया तीव्र होने से अधिक भूख लगती है। रक्ताल्पता से पीड़ित स्त्री-पुरुषों को अंजीरों के सेवन से बहुत लाभ होता है। अंजीर सरलता से नहीं पचते इसलिए सेवन करने से पहले अंजीरों को कुछ घंटे पहले जल में डालकर रखना चाहिए। इससे अंजीर कोमल हो जाते हैं और उसकी पाचन-क्रिया भी सरलता से होती है।

मधुमेह के रोगियों को अंजीर खाने से बहुत लाभ होता है। अंजीर के सेवन से रक्त और पित्त-विकार नष्ट होते हैं। अस्थमा रोगियों द्वारा अंजीर का सेवन करने से वक्षस्थल में एकत्र कफ सरलता से निकल जाता है। अंजीर को देर तक जल में डालकर रखने और फिर खाने से कोष्ठबद्धता नष्ट होती है। दूध में उबालकर सेवन करने से भी कोष्ठबद्धता नष्ट होती है।

अंजीर का रस निकालकर भी सेवन किया जाता है। अंजीर के रस के सेवन से मूत्र का अवरोध नष्ट होता है। अंजीर के सेवन से यकृत को अधिक शक्ति मिलती है। यकृत अधिक क्षमता से काम करता है। खांसी के प्रकोप में भी अंजीर लाभ पहुँचाता है। शुष्क कास (सूखी खाँसी) को कफ निष्कासित करता है। गर्भावस्था में स्त्रियों को अंजीर का सेवन करने से भरपूर शक्ति और पोषक तत्त्व प्राप्त होते हैं। लौह तत्त्व की अधिकता से रक्त की वृद्धि होती है।

गुणकारी रासायनिक तत्त्व

चिकित्सक रक्ताल्पता व शारीरिक रूप से निर्बल स्त्री-पुरुषों को अंजीर के सेवन का परामर्श देते हैं। अंजीर में पोटेशियम, लौह, मैग्नीशियम, फास्फोरिक अम्ल, क्लोरीन आदि तत्त्व गुणकारी होते हैं। अंजीर में विटामिन 'ए', 'बी' और 'सी' भी अल्प मात्रा में पाए जाते हैं। अंजीर में शर्करा और क्षार की अत्यधिक मात्रा होती है।

अंजीर में प्रोटीन 3.5%, वसा, कार्बोहाइड्रेट 18.7%, कैल्शियम 0.06%, फास्फोरस 0.03%, मात्रा में होता है। अंजीर में जल 80.8% मात्रा में होता है। 100 ग्राम मात्रा में अंजीर खाने से 37 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है।

औषधीय उपयोग

❑ अंजीर का सेवन करने से कोष्ठबद्धता अतिशीघ्र नष्ट होती है।

❑ अंजीर के सेवन से वात-पित्त विकार नष्ट होते हैं।

❑ अंजीर रक्त को शुद्ध करने के साथ ही रक्त की वृद्धि भी करता है।

❑ अंजीर का रस पीने से मूत्र का अवरोध नष्ट होता है। मूत्र अधिक मात्रा में निष्कासित होता है। इससे मूत्र-विकार भी नष्ट होते हैं।

❑ अंजीर खाने व रस पीने से गर्भावस्था में कोष्ठबद्धता से मुक्ति मिलती है।

❑ अंजीर के सेवन से शरीर की निर्बलता और थकान नष्ट होती है।

❑ चिकित्सकों के अनुसार अंजीर शीतल, पित्त और रक्त विकार नाशक होती है। इसके सेवन से पित्त और रक्त के रोग-विकारों के साथ कफ विकार भी नष्ट करता है।

❑ अंजीर का मुरब्बा रक्त की वृद्धि करता है और पित्त विकारों को नष्ट करता है।

❑ अजीर में लौह तत्त्व (आयरन) अधिक मात्रा में होता है इसलिए गर्भवती स्त्रियों में लौहतत्त्व की पूर्ति करता है। अंजीर का रस सेवन करने से रक्ताल्पता के रोगियों में अधिक रक्त की वृद्धि होती है।

❑ अंजीर को दूध में उबाल कर सेवन करने से पाचन-शक्ति अधिक विकसित होती है। शारीरिक निर्बलता भी नष्ट होती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

अमर रहे सत्यार्थप्रकाश

कोटि-कोटि जग की आश, अमर रहे सत्यार्थप्रकाश।
जीवन ज्योति जगाने वाला, प्रेम पीयूष पिलाने वाला।
सुख-सन्मार्ग सुझाने वाला, पाप-भावना का करे विनाश॥
सत्य सनातन धर्म सिखाता, भेद-भाव भ्रम दूर भगाता।
प्रभु पद प्रेम प्रीति उपजाता, दूर भगाता भव भय त्रास॥
वैदिक नाद बजाया इसने, बुद्धिवाद युग लाया इसने।
ढोंग दुर्ग का ढाया इसने, पाखण्डी हो गये उदास॥
परमेश्वर का गुणगान इसमें, सृष्टिक्रम विज्ञान इसमें।
सत्य असत्य पहचान इसमें, मानवता का पूर्ण विकास॥
आर्यजनों की शान यही है, जीवन धन और प्राण यही है।
धर्म कर्म ईमान यही है, सह न सके इसका उपहास॥
इसकी शान न जाने देंगे, इस पै आँच न आने देंगे।
जाय जान तो जाने देंगे, **'इन्द्र'** न होगा इसका ह्रास॥

वैदिक उजियारा हो जाए....

सत्यार्थप्रकाश का पढ़ना, यदि जन-जन में प्यारा हो जाए।
पढ़ करके सभी अमल करें, वैदिक उजियारा हो जाए॥
फूले फुलवाड़ी वेदों की, जग से अन्धियारा मिट जाए।
सत्य धर्म पर अमल करें, स्वर्ग सारा जग बन जाए॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज न्यू पालम विहार, गुड़गाँव	27 से 28 अप्रैल 2013
2.	आर्यसमाज घरौंडा जिला करनाल	10 से 12 मई 2013
3.	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाड़ी	25 से 26 मई 2013
4.	आर्यसमाज गाढ़ा जिला महेन्द्रगढ़	1 से 2 जून 2013
5.	आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ़	8 से 9 जून 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।